सूरीनाम में हिंदी

श्री वीरजानंद अवतार

हिंदी प्रेमियों, सादर सप्रेम नमस्ते! अगले साल, 2015 में भारतीय मूल के लोग, सूरीनाम में 142वाँ आप्रवासी दिवस, हर साल की तरह, बहुत धुम-धाम से मनाएँगे। एक क्षण के लिए उस परिस्थिति को ध्यान में लाया जाए, जब 05 जून 1873 को 422 लोग, लल्ला रूख़ नामक जहाज़ में 90 दिन डूबते-उतरते सूरीनामी घाट पहुँचे, "04 जून रात्री की बेला है ", चेहरे पर हताशा, साथ-ही-साथ आशा भी है, आशा इसलिए कि हम पहुँचे श्री राम देश, जहाँ सोने की थाली में खाने को मिलेगा। हाथ में रामायण, बगल में गठड़ी, कंठ में भोजपुरी, हिंदी और अवधी।

आज वो गठड़ी खुलकर अवश्यमेव बड़े-बड़े घरों में, पदों पर और ऊँची-ऊँची इमारतों में बदल गई लेकिन हाथ में रामायण और गीता, ज्यों-की-त्यों सुरक्षित है, हमारे दिल में और हमारे हाथों में भी। और कंठ में हिंदी और भोजपुरी उसी समय से अटक गई।मैं, वीरजानंद अवतार, उन्हीं में से एक हिंदुस्तानी हूँ, जिसकी हिंदी भाषा है ज़बानी, हिंदी अध्यापक व भारतीय सांस्कृतिक के%द्र में हिंदी के रत्न स्तर का विद्यार्थी हूँ। सूरीनाम साउथ अमेरिका महाद्वीप में स्थित एक बहुजातिय, बहुमाष्य एवं बहुसांस्कृतिक देश है। सरकारी भाषा डच है और इसके अलावा सरनामी, हिंदी, क्रियोली, चीनी, इंडोनेशियाई आदि, कुल मिलाकर 20 भाषाएँ हैं जो बोली जाती है। संस्था सूरीनाम हिंदी परिषद 05 सितंबर 1977 से व्यवस्थित रूप से हिंदी के प्रचार-प्रसार में लगी हुई है।

इससे पहले हमारे पूर्वज जिन्हें गोरे लोग शर्त-बंदी प्रथा के रूप में भारत से लाएँ थे, अपने ढंग से, घरों में, मंदिरों में आदि स्थानों पर हिंदी पढ़ाते थे। उन दिनों नाथुराम की पहली और दूसरी पुस्तक से हिंदी सिखाई जाती थी।

भारत से आए बाबो महातम सिंह ने, उस समय बहुत बड़ा योगदान दिया, सब को एक छत के नीचे एकत्रित कर, हिंदी भाषा और संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया। कबीर साहिब कहते हैं : "ऐसी बानी बोलिए, ऐसी भाषा बोलिए, मन का आपा खोय, औरन को शीतल करें, आपहूँ शीतल होय।"

आज हमारे देश रूरीनाम में हम सब बहुत गर्व के साथ कह सकते हैं, उन पूर्वजों, उन आजा-आजी, नाना-नानी से सीखी हिंदी भाषा और उससे जुड़ी धर्म-संस्कृति को, आज तक जीवित रखा है, यदि हम कहें कि हम उन आजा-आजी के संतान हैं तो हमारा कर्तव्य और उत्तरदायित्व बनता है कि हम भाषा और धर्म-संस्कृति को आगामी में सुरक्षित रखें। इस समय आठ दूर्दर्शन और दस आकाशवाणी के उद्घोषकों के द्वारा कार्यक्रम यथासंभव हिंदी में चलाया जा रहा है। कहने का तात्पर्य यह है कि आज भी वे लोग मौजूद हैं जिनके अंदर अभी भी ये आग लगी है कि अपनी संस्कृति को, भाषा के माध्यम से बचाना है। ये आग तीसारी पीढ़ी तक जलती रही और रहेगी, ये सोचकर कि हम अपने आजा-आजी के धरोहर, अपनी भाषा और संस्कृति को जीवित रखकर, दक्षिणा दे रहें हैं। यहाँ मैं रुककर एक विशेष बात आप को बताना चाहूँगा: "हम सूरीनाम की सरकार के शिक्षामंत्रालय का धन्यवाद अर्पित करना चाहँगे

जिन्होंने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में आज तक सहयोग दिया उअर हमें पूर्ण आशा है, भविष्य में भी सहयोग मिलता रहेगा।"

1982 में हिंदी परीक्षाओं को शिक्षा मंत्रालय द्वारा मान्यता प्राप्त हुई। संस्था सूरीनाम हिंदी परिषद के तत्वावधान में हर साल पाँच से छः सौ हिंदी विद्यार्थी, परीक्षा में भाग लेते हैं, प्रथमा से कोविद तक। भाषा रत्न की परीक्षा का प्रबंध भारत के हिंदी प्रचार संस्था, वर्धा द्वारा किया जाता है। हिंदी के स्तर प्रथमा से लेकर उत्तमा की पुस्तक 'मंजूषा' की रचना, सूरीनाम के हिंदी विद्वानों और भारतीय साँस्कृतिक केंद्र के हिंदी अध्यापकगण द्वारा, संयुक्त रूप से की गई है। कहते हैं :

मेरे सीने में न सही, तेरे सीने में ही सही।
आग कहीं भी हो, लेकिन जलनी चाहिय॥

लेकिन!!!

अब आनेवाली पीढ़ी तक, ये आग धीमी हो गई है और अब इस नई पीढ़ी को प्रेरणा देना मुश्किल हो जाता है। आज की परिस्थिति देखी जाए तो कितने कारणों से हिंदी और उससे जुड़ी सरनामी घट रही है।

कुछ कर्मठ लोग शाम को मंदिरों के प्रांगण में या अपनी छुट्टी की तिलांजलि देकर, रविवार को किसी सरकारी विद्यालय की छत के नीचे, हिंदी पाठशालाएँ चलती है। कुछ देर तक सोचिए, दिन-भर काम करने के बाद या कहिए थकान के बाद, सबको आराम की ज़रूरी है, इसके उपरांत 120 हिंदी से प्रेम रखनेवाले अध्यापक-अध्यापिकाओं को बिना वेतन काम करना पड़ता है, तो! सूरीनाम में हिंदी भाषा के घटने ला पहला कारण है : कठिन परिस्थितियों में बिना वेतन के, पढ़ाना।

दूसरा कारण : नई पीढ़ी की सोच कि हिंदी पढ़ाई से कोई व्यवसाय या नौकरी नहीं मिलती, तो क्यों पढ़े! इस तरह नई पीढ़ी को प्रेरणा देना मुश्किल हो जाता है।

अभी तक ह, सूरेनाम के लोग भाग्यशाली हैं कि हिंदी और भोजपुरी पूरे दक्षिण अमेरिका और कैरेबियाई देशों में, एक सूरीनाम में ही जीवित है लेकिन पाठन व वाचन जैसे हर कौशल में।

यहाँ की धार्मिक संस्था जैसे आर्य समाज, समातन धर्म, गायत्री परिवार में पवित्र ग्रंथों जैसे वेद आदि शास्त्र, रामायण, पुरान, गीता अभी जीवित है। धीरे-धीरे हिंदी के साथ, इन ग्रंथों की पढ़ाई भी कम हो रही है, करीबन चार साल पहले इन संस्थाओं के स्कूलों में हिंदी पढ़ाई जाती थी, आज ये भी समाप्त हो गई हैं। हरेक देश जहाँ बहुसंस्कृतियाँ हैं, अपनी-अपनी समस्याएँ भी होती हैं, जैसे आर्थिक स्थिति, जाति पक्ष, अनेक और जिससे भाषा विकास में रुकावट आ जाती है। इन सारी समस्याओं का समाधान किस तरह से किया जाए, ये एक गंभीर प्रश्न है जो हिंदी प्रेमियों के लिए जहाँ तक भाषा विकास का प्रश्न है, एक बहुत बड़ी चुनौती है।

अरे हिंदी प्रेमियों, सावधान !!! हिंदी भाषा हमारी माँ है, मातृभूमि, मातृभाषा और माँ, इसका कोई विकल्प नहीं, जिस दिन या तो लापरवाही से या किसी और कारण से, हिंदी और उससे जुड़ी संस्कृति हम से छीन ली जाएगी, तब हम बहुत पछताएँगे, तब पछताने से क्या होगा, जब चिड़िया ने ..... तब पछताए क्या होवत है, तब हम न घर के होंगे न घाट के। भारतीय राजदूतावास तथा भारतीय सांस्कृतिक केंद्र से हमारा चिर संबंध है जिससे हमें पाठ्य पुस्तकें, समय-समय पर प्राप्त होती रहती है। इसके अलावा छात्रवृत्ति (scholarship) और कुछ सालों से अध्यापक-अध्यापिकाओं को मानदेय (grant) दिए जा रहे हैं। सांस्कृतिक केंद्र के हिंदी अध्यापक द्वारा परुइषद में नियमित रूप से कार्यशाला, सेमिनार तथा अध्यापकों के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण कार्यों का आयोजन होता है। मतलब भारत सरकार योगदान दे रही है, इसके लिए सूरीनाम के लोग आभारी है और धन्यवाद भी देते हैं। योगदान में कुछ और जोड़ दिया जाए तो मुमकिन है, भविष्य में हम हिंदी और उससे जुड़ी सरनामी धर्म और संस्कृति का जो आज स्तर है, उसे बचा पाएँगे।

सब से पहले उन 120 अद्यापकों को मासिक वेतन दिया जाए, ताँकि लोगों को ये लगे कि पढ़ने के बाद नौकरी मिलेगी। आज के आधुनिक युग में युवा के पास अवसरों (opportunities) की कमी नहीं है। वो हिंदी की पढ़ाई में व्यवसाय ढूढ़ते हैं, हमें यहाँ, भारत सरकार के योगदान की सख़्त से सख़्त ज़रूरत है क्योंकि हमें लगता है कि अभी तक जो सँभाल कर रखा है, अब हाथ से छूट रहा है।

जीवन ख़त्म हुआ....
मन की मशिनरी....
फूल चुनने आए थे बागे हयात में....
फ़ुरसत में तख्त न सिमरण का वख्त निकला....

भारत से 17 हज़ार किलोमीटर दूर, पश्चिमी गोलार्ध में, एक छोटा भारत है, अभी हरा-भरा है और धड़क रहा है, उसकी अस्मिता, उसकी पहचान बचाना हम सब का काम है, इसलिए "अब न चौहान"।

"पुस्तक विहीन घर, खिड़की से विहीन भवन के समान होता है, समृद्ध भाषा से विहीन देश, तारों से विहीन गगन के समान होता है।"

विभागाध्यक्ष, खाद्य निरीक्षण सेवा,
स्वास्थ्य मंत्रालय, सूरीनाम
पी.ओ.बॉक्स 1061
पारामारिबो, सूरीनाम
wirdjarita@sr.net